

## श्रीपार्वतीसहस्रनामस्तोत्रम्

{ श्रीपार्वतीसहस्रनामस्तोत्रम् }

हिमवानुवाच ॥

डा त्वं देवि विशालाक्षि शशाङ्कावयवाङ्किते ॥

न जाने त्वामहं वत्से यथावद् ब्रूहि पृच्छते ॥ १ ॥

गिरीन्द्रवचनं श्रुत्वा ततः सा परमेश्वरी ॥

व्याजहार महाशैलं योगिनामभयप्रद ॥ २ ॥

देव्युवाच ॥

मां विद्धि परमां शक्तिं परमेश्वरसमाश्रयाम् ॥

अनन्यामव्ययामेकां यां पश्यन्ति मुमुक्षवः ॥ ३ ॥

अहं वै सर्वभावानामात्मा सर्वान्तरा शिवा ॥

शाश्वतैश्वर्यविज्ञानमूर्तिः सर्वप्रवर्तिता ॥ ४ ॥

अनन्ताऽनन्तमहिमा संसारार्णवतारिणी ॥

दिव्यं ददामि ते यक्षुः पश्य मे रूपमैश्वरम् ॥ ५ ॥

अेतावद्भुक्त्वा विज्ञानं दत्त्वा हिमवते स्वयम् ॥

स्वं रूपं दर्शयामास दिव्यं तत् पारमेश्वरम् ॥ ६ ॥

कोटिसूर्यप्रतीकाशं तेजोभिम्बं निराकुलम् ॥

ज्वालामालासहस्राढ्यं कालानलशतोपमम् ॥ ७ ॥

दंष्ट्राकरालं दुर्द्धर्षं जटामण्डलमण्डितम् ॥  
त्रिशूलवरहस्तं य घोररूपं भयानकम् ॥ ८ ॥

प्रशान्तं सौम्यवदनमनन्ताश्चर्यसंयुतम् ॥  
चन्द्रावयवलक्ष्माणं चन्द्रकोटिसमप्रभम् ॥ ९ ॥

किरीटिनं गद्यहस्तं नूपुरैरुपशोभितम् ॥  
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ॥ १० ॥

शङ्खचक्रधरं काम्यं त्रिनेत्रं कृत्तिवाससम् ॥  
आण्डस्थं चाण्डबाह्यस्थं बाह्यमाभ्यन्तरं परम् ॥ ११ ॥

सर्वशक्तिमयं शुभ्रं सर्वाकारं सनातनम् ॥  
अह्नेन्द्रोपेन्द्रयोगीन्द्रैर्वन्द्यमानपद्मभुजम् ॥ १२ ॥

सर्वतः पाणिपादान्तं सर्वतोऽक्षिशिरोमुभम् ॥  
सर्वमावृत्य तिष्ठन्तं दृष्ट्वा परमेश्वरम् ॥ १३ ॥

दृष्ट्वा तद्दीदृशं रूपं देव्या माहेश्वरं परम् ॥  
भयेन य समाविष्टः स राज्ञ हृष्टमानसः ॥ १४ ॥

आत्मन्याधाय यात्मानमोङ्कारं समनुस्मरन् ॥  
नाम्नामष्टसहस्रेण तुष्टाव परमेश्वरीम् ॥ १५ ॥

हिमवानुवाच ॥

शिवोमा परमा शक्तिरनन्ता निष्कलाऽमला ॥  
शान्ता माहेश्वरी नित्या शाश्वती परमाक्षरा ॥ १ ॥

अचिन्त्या डेवलाऽनन्त्या शिवात्मा परमात्मिका ॥  
अनादिरव्यया शुद्धा देवात्मा सर्वगाऽयला ॥ २ ॥

अेकानेकविभागरथा मायातीता सुनिर्मला ॥  
महामाहेश्वरी सत्या महादेवी निरञ्जना ॥ ३ ॥

काष्ठा सर्वान्तरस्था य चिच्छक्तिरतिलालसा ॥  
नन्दा सर्वात्मिका विद्या ज्योतीऽपाऽमृताक्षरा ॥ ४ ॥

शान्तिः प्रतिष्ठा सर्वेषां निवृत्तिरमृतप्रदा ॥  
व्योममूर्तिर्व्योमलया व्योमाधाराऽच्युताऽमरा ॥ ५ ॥

अनादिनिधनाऽमोघा कारणात्मा कलाऽकला ॥  
कतुः प्रथमज्ज नाभिरमृतस्यात्मसंश्रया ॥ ६ ॥

प्राणेश्वरप्रिया माता महामहिषघातिनी ॥  
प्राणेश्वरी प्राणरूपा प्रधानपुरुषेश्वरी ॥ ७ ॥

सर्वशक्तिकलाकारा ज्योत्स्ना धौर्महिमास्पदा ॥  
सर्वकार्यनियन्त्री य सर्वभूतेश्वरेश्वरी ॥ ८ ॥

अनादिरव्यक्तगुहा महानन्दा सनातनी ॥

आकाशयोनिर्योगस्था महायोगेश्वरेश्वरी ॥ ८ ॥

महामाया सुदुष्पूरा मूलप्रकृतिरीश्वरी ॥

संसारयोनिः सकला सर्वशक्तिसमुद्भवा ॥ १० ॥

संसारपारा दुर्वारा दुर्निरीक्ष्या दुरासदा ॥

प्राणशक्तिः प्राणविद्या योगिनी परमा कला ॥ ११ ॥

महाविभूतिर्दुर्द्धर्षा मूलप्रकृतिसंभवा ॥

अनाद्यनन्तविभवा परार्था पुरुषारणिः ॥ १२ ॥

सर्गस्थित्यन्तकरणी सुदुर्वाच्या दुरत्यया ॥

शब्दयोनिः शब्दमयी नादाभ्या नादविग्रहा ॥ १३ ॥

प्रधानपुरुषातीता प्रधानपुरुषात्मिका ॥

पुराणी चिन्मयी पुंसामादिः पुरुषरूपिणी ॥ १४ ॥

भूतान्तरात्मा कूटस्था महापुरुषसंज्ञिता ॥

जन्ममृत्युजरातीता सर्वशक्तिसमन्विता ॥ १५ ॥

व्यापिनी चानवच्छिन्ना प्रधानानुप्रवेशिनी ॥

क्षेत्रज्ञशक्तिरव्यक्तलक्षणा मलवर्जिता ॥ १६ ॥

अनादिमायासंभिन्ना त्रितत्त्वा प्रकृतिर्गुहा ॥

महामायासमुत्पन्ना तामसी पौरुषी ध्रुवा ॥ १७ ॥

व्यक्ताव्यक्तात्मिका कृष्णा रक्ता शुक्ला प्रसूतिका ॥  
अकार्या कार्यजननी नित्यं प्रसवधर्मिणी ॥ १८ ॥

सर्गप्रलयनिर्मुक्ता सृष्टिस्थित्यन्तधर्मिणी ॥  
ब्रह्मगर्भा यतुर्विशा पद्मनाभाऽय्युतात्मिका ॥ १९ ॥

वैद्युती शाश्वती योनिर्जगन्मातेश्वरप्रिया ॥  
सर्वाधारा महाज्ञा सर्वेश्वर्यसमन्विता ॥ २० ॥

विश्वज्ञा महागर्भा विश्वेशेष्ठानुवर्तिनी ॥  
महीयसी ब्रह्मयोनिर्महालक्ष्मीसमुद्भवा ॥ २१ ॥

महाविमानमध्यस्था महानिद्रात्महेतुका ॥  
सर्वसाधारणी सूक्ष्मा ह्यविद्या पारमार्थिका ॥ २२ ॥

अनन्तज्ञाऽनन्तस्था देवी पुरुषमोहिनी ॥  
अनेकाकारसंस्थाना कालत्रयविवर्जिता ॥ २३ ॥

ब्रह्मजन्मा हरेर्मूर्तिर्ब्रह्मविषयशिवात्मिका ॥  
ब्रह्मेशविषयजननी ब्रह्माप्या ब्रह्मसंश्रया ॥ २४ ॥

व्यक्ता प्रथमजा ब्राह्मी महती ज्ञानज्ञपिणी ॥  
वैराग्यैश्वर्यधर्मात्मा ब्रह्ममूर्तिर्हृदिस्थिता ॥  
अपांयोनिः स्वयंभूतिर्मानसी तत्त्वसंभवा ॥ २५ ॥

ईश्वराणी च शर्वाणी शंकरार्द्धशरीरिणी ॥  
भवानी चैव रुद्राणी महालक्ष्मीरथाम्बिका ॥ २६ ॥

महेश्वरसमुत्पन्ना भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ॥  
सर्वेश्वरी सर्ववन्धा नित्यं मुदितमानसा ॥ २७ ॥

ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्रनमिता शंकरेच्छानुवर्तिनी ॥  
ईश्वरार्द्धासनगता महेश्वरपतिव्रता ॥ २८ ॥

सकृद्धिभाविता सर्वा समुद्रपरिशोषिणी ॥  
पार्वती हिमवत्पुत्री परमानन्ददायिनी ॥ २९ ॥

गुणाढ्या योगजा योग्या ज्ञानमूर्तिर्विकासिनी ॥  
सावित्री कमला लक्ष्मीः श्रीरनन्तोरसि स्थिता ॥ ३० ॥

सरोजनिलया मुद्रा योगनिद्रा सुरार्द्धिनी ॥  
सरस्वती सर्वविद्या जगज्ज्येष्ठा सुमङ्गला ॥ ३१ ॥

वाग्देवी वरदा वाच्या कीर्तिः सर्वार्थसाधिका ॥  
योगीश्वरी ब्रह्मविद्या महाविद्या सुशोभना ॥ ३२ ॥

गुह्यविद्यात्मविद्या च धर्मविद्यात्मभाविता ॥  
स्वाहा विश्वंभरा सिद्धिः स्वधा मेधा धृतिः श्रुतिः ॥ ३३ ॥

नीतिः सुनीतिः सुकृतिर्माधवी नरवाहिनी ॥

अञ्ज विभावरी सौम्या भोगिनी भोगद्यिनी ॥ ३४ ॥

शोभा वंशकरी लोला मालिनी परभेष्टिनी ॥  
त्रैलोक्यसुन्दरी रम्या सुन्दरी कामचारिणी ॥ ३५ ॥

महानुभावा सत्त्वस्था महामहिषमर्दनी ॥  
पद्ममाला पापहरा विचित्रा मुकुटानना ॥ ३६ ॥

शान्ता चित्राभरधरा दिव्याभरणाभूषिता ॥  
हंसाभ्या व्योमनिलया जगत्सृष्टिविवर्द्धिनी ॥ ३७ ॥

निर्यन्त्रा यन्त्रवाहस्था नन्दिनी भद्रकालिका ॥  
आदित्यवर्णा कौमारी मयूरवस्वाहिनी ॥ ३८ ॥

वृषासनगता गौरी महाकाली सुरार्चिता ॥  
अदितिर्नियता रौद्री पद्मगर्भा विवाहना ॥ ३९ ॥

विष्णुपाक्षी लेलिहाना महापुरनिवासिनी ॥  
महाङ्गलाऽनवधाङ्गी कामपूरा विभावरी ॥ ४० ॥

विचित्ररत्नमुकुटा प्रणतार्तिप्रभञ्जनी ॥  
कौशिकी कर्षणी रात्रिस्त्रिदशार्तिविनाशिनी ॥ ४१ ॥

भद्रुपा सुष्वा य विष्णुपा ऽपवर्जिता ॥  
भक्तार्तिशमनी भव्या भवभावविनाशिनी ॥ ४२ ॥

निर्गुणा नित्यविभवा निःसारा निरपत्रपा ॥  
यशस्विनी सामगीतिर्भवाङ्गनिलयालया ॥ ४३ ॥

दीक्षा विद्याधरी दीप्ता महेन्द्रविनिपातिनी ॥  
सर्वातिशायिनी विद्या सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥ ४४ ॥

सर्वेश्वरप्रिया ताक्ष्या समुद्रान्तरवासिनी ॥  
अकलङ्का निराधारा नित्यसिद्धा निरामया ॥ ४५ ॥

शामधेनुर्बृहद्भर्मा धीमती मोहनाशिनी ॥  
निःसङ्कल्पा निरातङ्का विनया विनयप्रदा ॥ ४६ ॥

ज्वालामाला सहस्राढ्या देवदेवी मनोन्मनी ॥  
महाभगवती दुर्गा वासुदेवसमुद्भवा ॥ ४७ ॥

महेन्द्रोपेन्द्रभगिनी भक्तिगम्या परावरा ॥  
ज्ञानज्ञेया जरातीता वेदान्तविषया गतिः ॥ ४८ ॥

दक्षिणा दहना दद्या सर्वभूतनमस्कृता ॥  
योगमाया विभावज्ञा महामाया महीयसी ॥ ४९ ॥

संध्या सर्वसमुद्धतिर्भ्रक्षवृक्षाश्रयानतिः ॥  
बीजङ्कुरसमुद्धतिर्महाशक्तिर्महामतिः ॥ ५० ॥

भ्यातिः प्रज्ञा चितिः संवित् महाभोगीन्द्रशायिनी ॥



विकृतिः शांकरि शास्त्री गणगन्धर्वसेविता ॥५१॥

वैश्वानरी महाशाला देवसेना गुहप्रिया ॥

महारत्रिः शिवानन्द शयी दुःस्वप्ननाशिनी ॥५२॥

धन्या पून्या जगद्धात्री दुर्विज्ञेया सुप्रिणी ॥

गुहाम्बिका गुणोत्पत्तिर्महापीठा मरुत्सुता ॥५३॥

हव्यवाहान्तरागादिः हव्यवाहसमुद्भवा ॥

जगद्योनिर्जगन्माता जन्ममृत्युजरातिगा ॥५४॥

बुद्धिमाता बुद्धिमती पुरुषान्तरवासिनी ॥

तरस्विनी समाधिस्था त्रिनेत्रा द्विवि संस्थिता ॥५५॥

सर्वेन्द्रियमनोमाता सर्वभूतहृदि स्थिता ॥

संसारतारिणी विद्या ब्रह्मवादिमनोलया ॥५६॥

ब्रह्माणी बृहती ब्राह्मी ब्रह्मभूता भवारणिः ॥

हिरण्ययी महारत्रिः संसारपरिवर्तिका ॥५७॥

सुमालिनी सुप्रिया च भाविनी तारिणी प्रभा ॥

उन्मीलनी सर्वसहा सर्वप्रत्ययसाक्षिणी ॥५८॥

सुसौम्या चन्द्रवदना ताण्डवासक्तमानसा ॥

सत्त्वशुद्धिकरी शुद्धिर्मलत्रयविनाशिनी ॥५९॥

१गत्प्रिया १गन्मूर्तिस्त्रिमूर्तिर्मृताश्रया ॥  
निराश्रया निराहारा निरङ्कुर्वनोद्धवा ॥ ५० ॥

चन्द्रहस्ता विचित्राङ्गी अग्विणी पद्मधारिणी ॥  
परावरविधानज्ञा महापुरुषपूर्वा ॥ ५१ ॥

विद्येश्वरप्रिया विद्या विद्युङ्क्लिहा जितश्रमा ॥  
विद्यामयी सहस्राक्षी सहस्रवदनात्मजा ॥ ५२ ॥

सहस्ररश्मिः सत्त्वस्था महेश्वरपद्मश्रया ॥  
क्षालिनी सन्मयी व्याप्ता तैवसी पद्मबोधिका ॥ ५३ ॥

महामायाश्रया मान्या महादेवमनोरमा ॥  
व्योमलक्ष्मीः सिंहस्था चेकितानाऽमितप्रभा ॥ ५४ ॥

वीरेश्वरी विमानस्था विशोका शोकनाशिनी ॥  
अनाहता कुण्डलिनी नलिनी पद्मवासिनी ॥ ५५ ॥

सद्यनन्द सद्यकीर्तिः सर्वभूताश्रयस्थिता ॥  
वाग्देवता ब्रह्मकला कलातीता कलारणिः ॥ ५६ ॥

ब्रह्मश्रीर्ब्रह्महृद्या ब्रह्मविष्णुशिवप्रिया ॥  
व्योमशक्तिः क्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्तिः परागतिः ॥ ५७ ॥

क्षोभिका बन्धिका भेद्या भेद्यभेद्यविवर्जिता ॥

अभिन्नाभिन्नसंस्थाना वंशिनी वंशहारिणी ॥ ५८ ॥

गुह्यशक्तिर्गुणातीता सर्वदा सर्वतोमुष्णी ॥  
भगिनी भगवत्पत्नी सकला कालहारिणी ॥ ५९ ॥

सर्ववित् सर्वतोभद्रा गुह्यातीता गुहारिणीः ॥  
प्रक्रिया योगमाता च गङ्गा विश्वेश्वरेश्वरी ॥ ६० ॥

कपिला कापिला कान्ता कनकाभा कलान्तरा ॥  
पुण्या पुष्करिणी भोक्त्री पुरंदरपुरस्सरा ॥ ६१ ॥

पोषणी परमैश्वर्यभूतिदा भूतिभूषणा ॥  
पञ्चब्रह्मसमुत्पत्तिः परमार्थार्थविग्रहा ॥ ६२ ॥

धर्मोदया भानुमती योगिज्ञेया मनोजवा ॥  
मनोहरा मनोरक्षा तापसी वेदज्ञपिणी ॥ ६३ ॥

वेदशक्तिर्वेदमाता वेदविद्याप्रकाशिनी ॥  
योगेश्वरेश्वरी माता महाशक्तिर्मनोमयी ॥ ६४ ॥

विश्वावस्था वियन्मूर्तिर्विद्युन्माला विहायसी ॥  
किंनरी सुरभी वन्धा नन्दिनी नन्दिवल्लभा ॥ ६५ ॥

भारती परमानन्दा परापरविभेदिका ॥  
सर्वप्रहरणोपेता काम्या कामेश्वरेश्वरी ॥ ६६ ॥

अचिन्त्याऽचिन्त्यविभवा हृल्लेभा कनकप्रभा ॥  
कूष्माण्डी धनरत्नाढ्या सुगन्धा गन्धद्ययिनी ॥ ७७ ॥

त्रिविक्रमपद्मेच्छता धनुष्पाणिः शिवोदया ॥  
सुदुर्लभा धनाध्यक्षा धन्या पिङ्गललोचना ॥ ७८ ॥

शान्तिः प्रभावती दीप्तिः पङ्कजयतलोचना ॥  
आधा हृत्कमलोच्छता गवां माता रणप्रिया ॥ ७९ ॥

सत्किंया गिरिजा शुद्धा नित्यपुष्टा निरन्तरा ॥  
दुर्गाकृत्यायनी चण्डी चर्यिका शान्तविग्रहा ॥ ८० ॥

हिरण्यवर्णा रवनी जगदन्त्रप्रवर्तिका ॥  
मन्दराद्रिनिवासा च शारदा स्वर्णमालिनी ॥ ८१ ॥

रत्नमाला रत्नगर्भा पृथ्वी विश्वप्रमाथिनी ॥  
पद्मानना पद्मनिभा नित्यतुष्टाऽमृतोद्धवा ॥ ८२ ॥

धुन्वती दुःप्रकम्प्या च सूर्यमाता दृषद्वती ॥  
महेन्द्रभगिनी मान्या वरेण्या वरदर्पिता ॥ ८३ ॥

कल्याणी कमला रामा पञ्चभूता वरप्रदा ॥  
वाय्या वरेश्वरी वन्द्या दुर्वा दुरतिक्रमा ॥ ८४ ॥

कालरात्रिर्महावेगा वीरभद्रप्रिया हिता ॥

भद्रकाली जगन्माता भक्तानां भद्रदायिनी ॥ ८५ ॥

कराला पिङ्गलाकारा नामभेदाऽमहामदा ॥

यशस्विनी यशोदा च षडध्वपरिवर्तिता ॥ ८६ ॥

शङ्खिनी पद्मिनी सांभ्या सांभ्ययोगप्रवर्तिता ॥

चैत्रा संवत्सराश्ढा जगत्संपूरणीन्द्रजा ॥ ८७ ॥

शुभमारिः भेचरी स्वस्था कम्बुग्रीवा कलिप्रिया ॥

भगध्वजा भगाश्ढा परार्ध्या परमालिनी ॥ ८८ ॥

अैश्वर्यवर्त्मनिलया विरक्ता गरुडासना ॥

जयन्ती हृद्गुहा रम्या गह्वरेष्ठा गणान्तरीः ॥ ८९ ॥

संकल्पसिद्धा साम्यस्था सर्वविज्ञानदायिनी ॥

कलिकल्मषहन्त्री च गुह्योपनिषद्भुक्ता ॥ ९० ॥

निष्ठा धृष्टिः स्मृतिर्व्याप्तिः पुष्टिस्तुष्टिः क्रियावती ॥

विश्वामरेश्वरेशाना भुक्तिर्भुक्तिः शिवाऽमृता ॥ ९१ ॥

लोहिता सर्पमाला च भीषणी वनमालिनी ॥

अनन्तशयनाऽनन्या नरनारायणोद्भवा ॥ ९२ ॥

नृसिंही दैत्यमथनी शङ्खचक्रगदाधरा ॥

संकर्षणसमुत्पत्तिरम्बिकापादसंश्रया ॥ ९३ ॥

महाज्वाला महामूर्तिः सुमूर्तिः सर्वकामधुक् ॥  
सुप्रभा सुस्तना गौरी धर्मकामार्थमोक्षदा ॥ ८४ ॥

भ्रूमध्यनिलया पूर्वा पुराणपुरुषारणिः ॥  
महाविभूतिदा मध्या सरोजनयना समा ॥ ८५ ॥

अष्टादशभुजाऽनाघा नीलोत्पलदलप्रभा ॥  
सर्वशक्त्यासनाऽढा धर्माधर्मार्थवर्जिता ॥ ८६ ॥

वैराग्यज्ञाननिरता निरालोका निरिन्द्रिया ॥  
विचित्रगहनाधारा शाश्वतस्थानवासिनी ॥ ८७ ॥

स्थानेश्वरी निरानन्दा त्रिशूलवरधारिणी ॥  
अशेषदेवतामूर्तिर्देवता वरदेवता ॥  
गणाम्बिका गिरेः पुत्री निशुम्भविनिपातिनी ॥ ८८ ॥

अवर्णा वार्णरहिता निवर्णा बीजसंभवान्ना ॥  
अनन्तवर्णाऽनन्यस्था शंकरि शान्तमानसा ॥ ८९ ॥

अगोत्रा गोमती गोप्त्री गुह्यरूपा गुणोत्तरा ॥  
गौर्गीर्गव्यप्रिया गौणी गणेश्वरनमस्कृता ॥ ९० ॥

सत्यमात्रा सत्यसंधा त्रिसंध्या संधिवर्जिता ॥  
सर्ववाद्यश्रया संख्या सांख्ययोगसमुद्भवा ॥ ९१ ॥

असंभ्रयाऽप्रभयाभ्या शून्या शुद्धकुलोद्धवा ॥  
बिन्दुनादसमुत्पत्तिः शंभुवामा शशिप्रभा ॥ १०२ ॥

विसङ्गा भेदरहिता मनोज्ञा मधुसूदनी ॥  
महाश्रीः श्रीसमुत्पत्तिस्तमःपारे प्रतिष्ठिता ॥ १०३ ॥

त्रितत्त्वमाता त्रिविधा सुसूक्ष्मपदसंश्रया ॥  
शान्त्यतीता मलातीता निर्विकारा निराश्रया ॥ १०४ ॥

शिवाभ्या चित्तनिलया शिवज्ञानस्वऽपिणी ॥  
दैत्यघ्नवनिर्मात्री काश्यपी कालकल्पिका ॥ १०५ ॥

शास्त्रयोनिः क्रियामूर्तिश्चतुर्वर्गप्रदशिखा ॥  
नारायणी नरोद्धृतिः कौमुदी लिङ्गधारिणी ॥ १०६ ॥

कामुकी ललिता भावा परापरविभूतिघ्ना ॥  
परान्तजतमहिमा भद्रवा वामलोचना ॥ १०७ ॥

सुभद्रा देवकी सीता वेदवेद्यज्ञपारगा ॥  
मनस्विनी मन्युमाता महामन्युसमुद्धवा ॥ १०८ ॥

अमृत्युरमृता स्वाहा पुरुद्धृता पुरुष्टुता ॥  
अशोथ्या भिन्नविषया हिरण्यरत्नप्रिया ॥ १०९ ॥

हिरण्या राजती हैमी हेमाभरणाभूषिता ॥

विभ्राजमाना दुर्ज्ञया ज्योतिषोमङ्गलप्रदा ॥ ११० ॥

महानिद्रासमुद्भूतिरनिद्रा सत्यदेवता ॥

दीर्घा ककुब्धिनी हृद्या शान्तिदा शान्तिवर्द्धिनी ॥ १११ ॥

लक्ष्म्याद्विशक्तिजननी शक्तियुक्तप्रवर्तिका ॥

त्रिशक्तिजननी जन्या षडूर्मिपरिवर्जिता ॥ ११२ ॥

सुधामा कर्मकरणी युगान्तदहनात्मिका ॥

संकर्षणी जगद्धात्री कामयोनिः किरीटिनी ॥ ११३ ॥

अैन्द्री त्रैलोक्यनमिता वैषण्वी परमेश्वरी ॥

प्रद्युम्नदयिता दान्ता युग्मदृष्टिसित्रलोचना ॥ ११४ ॥

मद्योत्कटा हंसगतिः प्रचण्डा चण्डविक्रमा ॥

वृषावेशा वियन्माता विन्ध्यपर्वतवासिनी ॥ ११५ ॥

हिमवन्मेरुनिलया कैलासगिरिवासिनी ॥

चाणूरहन्तृतनया नीतिज्ञा कामरूपिणी ॥ ११६ ॥

वेदविद्याप्रतप्ता धर्मशीलाऽनिलाशना ॥

वीरभद्रप्रिया वीरा महाकालसमुद्भवा ॥ ११७ ॥

विद्याधरप्रिया सिद्धा विद्याधरनिराकृतिः ॥

आप्यायनी हरन्ती य पावनी पोषणी भिला ॥ ११८ ॥



मातृका मन्मथोद्धृता वारिष्ठा वाहनप्रिया ॥  
करीषिणी सुधावाणी वीणावाहनतत्परा ॥ ११६ ॥

सेविता सेविका सेव्या सिनीवाली गुरुत्मती ॥  
अरुन्धती हिरण्याक्षी मृगाङ्गा मानद्यिनी ॥ १२० ॥

वसुप्रदा वसुमती वसोर्द्धारा वसुंधरा ॥  
धाराधरा वरारोहा वरावरसहस्रदा ॥ १२१ ॥

श्रीङ्गला श्रीमती श्रीशा श्रीनिवासा शिवप्रिया ॥  
श्रीधरा श्रीकरी कल्या श्रीधरार्द्धशरीरिणी ॥ १२२ ॥

अनन्तदृष्टिरक्षुद्रा धात्रीशा धनद्यप्रिया ॥  
निहन्त्री दैत्यसङ्घानां सिंहिका सिंहवाहना ॥ १२३ ॥

सुषेणा यन्द्रनिलया सुकीर्तिरिषिन्नसंशया ॥  
रसज्ञा रसदा रामा लेलिहानाऽमृतस्रवा ॥ १२४ ॥

नित्योदिता स्वयंभ्योतिरत्सुका मृतञ्जवनी ॥  
वज्रदण्डा वज्रबिह्व वैदेही वज्रविग्रहा ॥ १२५ ॥

मङ्गल्या मङ्गला माला मलिना मलहारिणी ॥  
गान्धर्वी गारुडी थान्द्री कम्बलाश्चतरप्रिया ॥ १२६ ॥

सौमिनी जनानन्द भुङ्कुटीकुटिलानना ॥

कङ्किङ्कारकरा कक्ष्या कंसप्राणपहारिणी ॥ १२७ ॥

युगंधरा युगावर्ती त्रिसंध्या हर्षवर्द्धनी ॥  
प्रत्यक्षदेवता द्विव्या द्विव्यगन्धा द्विवापरा ॥ १२८ ॥

शक्रासनगता शाक्री साध्वी नारी शवासना ॥  
धृष्टा विशिष्टा शिष्टेष्टा शिष्टाशिष्टप्रपूजिता ॥ १२९ ॥

शतश्रुपा शतावर्ती विनता सुरभिः सुरा ॥  
सुरेन्द्रमाता सुद्युम्ना सुषुम्ना सूर्यसंस्थिता ॥ १३० ॥

समीक्ष्या सत्प्रतिष्ठा य निवृत्तिज्ञानपाशगा ॥  
धर्मशास्त्रार्थकुशला धर्मज्ञा धर्मवाहना ॥ १३१ ॥

धर्माधर्मविनिर्मात्री धार्मिकाणां शिवप्रदा ॥  
धर्मशक्तिर्धर्ममयी विधर्मा विश्वधर्मिणी ॥ १३२ ॥

धर्मान्तरा धर्ममेघा धर्मपूर्वा धनावहा ॥  
धर्मोपदेष्ट्री धर्मात्मा धर्मगम्या धराधरा ॥ १३३ ॥

कापाली शाकला मूर्तिः कला कलितविग्रहा ॥  
सर्वशक्तिविनिर्मुक्ता सर्वशक्त्याश्रयाश्रया ॥ १३४ ॥

सर्वा सर्वेश्वरी सूक्ष्मा सुसूक्ष्मा ज्ञानरूपिणी ॥  
प्रधानपुरुषेशशा महादेवैकसाक्षिणी ॥

सद्यशिवा विद्यन्मूर्तिर्विश्वमूर्तिरमूर्तिका ॥ १३५ ॥

अेवं नाम्नां सहस्रेण स्तुत्वाऽसौ हिमवान् गिरिः ॥

भूयः प्रणम्य भीतात्मा प्रोवाचेदं कृताञ्जलिः ॥ १ ॥

यदेतद्वैश्वरं इपं घोरं ते परमेश्वरि ॥

भीतोऽस्मि साम्प्रतं दृष्ट्वा इपमन्यत् प्रदर्शय ॥ २ ॥

अेवमुक्त्वाऽथ सा देवी तेन शैलेन पार्वती ॥

संहृत्य दर्शयामास स्वइपमपरं पुनः ॥ ३ ॥

नीलोत्पलदलप्रभ्यं नीलोत्पलसुगन्धिकम् ॥

द्विनेत्रं द्विभुजं सौम्यं नीलालकविभूषितम् ॥ ४ ॥

रक्तपाद्मभुजतलं सुरक्तकरपल्लवम् ॥

श्रीमद् विशालसंवृतललाटतिलकोज्ज्वलम् ॥ ५ ॥

भूषितं चारुसर्वाङ्गं भूषणैरतिकोमलम् ॥

ध्यानमुरसा मालां विशालां हेमनिर्मिताम् ॥ ६ ॥

धृष्टिमतं सुभिम्बोष्ठं नूपुरारावसंयुतम् ॥

प्रसन्नवदनं दिव्यमनन्तमहिमास्पदम् ॥ ७ ॥

तद्दिदृशं समालोक्य स्वइपं शैलसत्तमः ॥

भीतिं संत्यज्य हृष्टात्मा बभाषे परमेश्वरीम् ॥ ८ ॥

॥ ँतल शुरीकूरुडुडुरललु डलरुवती सलहसुरनलडु सुतुतुरडु सडुडुडुडुडु ॥

Encoded and proofread by Kirk WOrtman kirkwort@hotmail.com

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

Last updated तुडुडु

<http://sanskritdocuments.org>

Parvati Sahasranama Stotram Lyrics in Gujarati PDF

% File name : paaravatisahasra.itx

% Category : sahasranAma

% Location : doc\\_devii

% Language : Sanskrit

% Subject : hinduism/religion

% Transliterated by : Kirk Wortman"

% Proofread by : Kirk Wortman"

% Description-comments : skandapuraaNa

% Latest update : August 13, 2002

% Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

% Site access : <http://sanskritdocuments.org>

%

% This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study

% and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of

% any website or individuals or for commercial purpose without permission.

% Please help to maintain respect for volunteer spirit.

%

We acknowledge well-meaning volunteers for [Sanskritdocuments.org](http://Sanskritdocuments.org) and other sites to have built the collection of Sanskrit texts.

Please check their sites later for improved versions of the texts.

This file should strictly be kept for personal use.

PDF file is generated [ October 13, 2015 ] at [Stotram](http://Stotram) Website